ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 51-54**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

1857 की क्रांति के अप्रतिम योद्धा – बाबू कुंवर सिंह

श्रीमती निर्मला सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर– इतिहास, ठा. बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला– फिरोजाबाद (उ0प्र0) भारत

Received-06.09.2025, Revised-14.09.2025, Accepted-20.09.2025 **E-mail :singhnirmala68@gmail.com**

सारांशः ***भारतीय इतिहास में 1857 की क्रांति को भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है, ब्रिटिश सरकार के शोषण और अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए 10 मई 1857 को मेरठ शहर में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के भारतीय सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह शीघ्र ही समस्त उत्तर भारत में आग की तरह फैल गया, इस विद्रोह के प्रमुख केंद्र मेरठ, दिल्ली, झांसी, कानपुर, लखनऊ, बलिया और बिहार थे। बिहार में 1857 के विद्रोह के नेतृत्वकर्ता प्रसिद्ध योद्धा बाबू कुंवर सिंह थे। जिनका जन्म 13 नवंबर 1777 को बिहार के जगदीशपुर (आरा के पास) जिले में हुआ था। इनके पिता राजा साहबजादा सिंह उज्जैनिया राजवंश से संबंधित थे और जगदीशपुर रियासत के जमीदार थे। 1826 में पिता की मृत्यु के बाद कुंवर सिंह जगदीशपुर के जमींदार बन गए। कुंवर सिंह का विवाह देवराज एस्टेट के सिसोदिया वंश के राजा फतह नारायण सिंह की बेटी से हुआ था। 1857 के विद्रोह में उन्होंने 80 वर्ष की अवस्था में अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध बगावत कर दी और अंग्रेजों को कई बार करारी शिकस्त दी। बाबू कुंवर सिंह ने दानापुर छावनी के विद्रोही सैनिकों का नेतृत्व करते हुए 27 जुलाई 1857 में आरा पर हमला करके, आरा को अंग्रेजों से मुक्त कराया। 2 अगस्त 1857 को बीबीगंज के युद्ध में मेजर विसेंट आइरे ने आरा को अपने कब्जे में ले लिया लिया। आइरे के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने 12 अगस्त को कुंवर सिंह की रियासत जगदीशपुर पर आक्रमण किया। 14 अगस्त 1857 को जगदीशपुर भी कुंवर सिंह के हाथों से निकल गया। उसके पश्चात कुंवर सिंह अपने सैनिकों के साथ रोहतास, रीवा, बांदा, ग्वालियर, कानपुर, लखनऊ ,आजमगढ़, बलिया के महा अभियान पर निकल गए। लगातार 8 महीने तक अंग्रेजों से मुकाबला करते रहे। 18 मार्च 1858 को कुंवर सिंह और उनकी सेना ने आजमगढ़ के पास अतरौलिया नामक स्थान पर ब्रिटिश सेनापति मिलमैन को पराजित किया। 28 मार्च 1858 को आजमगढ़ से कुछ दूर कर्नल डेम्स और कुंवर सिंह में युद्ध हुआ, जिसमें कर्नल डेम्स को जान बचाकर भागना पड़ा। 6 अप्रैल 1858 को लॉर्ड मार्कर की सेना ने कुंवर सिंह का रास्ता रोका, लेकिन उसे भी कुंवर सिंह की सेना से पराजित होकर भागना पड़ा। गाजीपुर के पास तानु नदी के पुल पर कुंवर सिंह का मुकाबला डगलस की सेना से हुआ, कुंवर सिंह यहां भी अंग्रेजी सेना को चकमा देकर भाग निकले। नघई गांव के निकट कुंवर सिंह अपनी सेना के साथ गंगा नदी पार कर रहे थे, उसी समय कमांडर लेगर्ड की सेना ने कुंवर सिंह पर हमला किया, उसे भी कुंवर सिंह ने पराजित कर दिया। गंगा नदी पार करते समय अंग्रेजों की एक गोली कुंवर सिंह के दाहिने हाथ में लगी, लेकिन कुंवर सिंह ने अपना हाथ अपनी तलवार से काटकर अलग कर दिया और अंग्रेजी सेना से युद्ध करते हुए जगदीशपुर की ओर बढ़े। 22 अप्रैल में उन्होंने जगदीशपुर पर अपना शासन स्थापित कर लिया, लेकिन हाथ के घाव में जहर फैल जाने के कारण 26 अप्रैल 1858 को इस महान पराक्रमी वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी का स्वर्गवास हो गया। कुंवर सिंह ने वीरता, संगठन, रणनीति और बलिदान की अनूठी मिसाल पेश की। उनका जीवन स्वतंत्रता, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। इस शोधपत्र बाबू कुंवर सिंह के जीवन, संघर्ष, युद्धनीति,योगदान और उनके समकालीन प्रभावों का अध्ययन किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– स्वतंत्रता, आधिपत्य, रियासत, परास्त, संग्राम, अपेक्षित, साहसिक, कालांतर, आत्म–सम्मान, योद्धा, स्वाधीनता।

अध्ययन का उद्देश्य– 80 वर्ष की आयु में कुंवर सिंह ने अपने सैनिकों के साथ रोहतास, रीवा, बांदा, ग्वालियर, कानपुर, लखनऊ, आजमगढ़, बलिया में लगातार 8 महीने तक अंग्रेजी सेनाओं को पराजित किया। बाबू कुंवर सिंह ने वीरता, संगठन, रणनीति और बलिदान की अनूठी मिसाल पेश की। बाबू कुंवर सिंह के जीवन, संघर्ष, युद्धनीति, योगदान को देश की युवा पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करना ही इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

अध्ययन की विधि– कुंवर सिंह के जीवन, संघर्ष, युद्धनीति, योगदान को प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से आधार सामग्री (डेटा) एकत्रित किया गया है। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं से आधार सामग्री (डेटा) एकत्रित करके विश्लेषण करने की पश्चात इस शोध पत्र में संकलित किया गया है।

प्रस्तावना– भारतीय इतिहास में 1857 की क्रांति को भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है, 10 मई 1857 को मेरठ शहर में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के भारतीय सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह शीघ्र ही समस्त उत्तर भारत में आग की तरह फैल गया, बिहार में 1857 के विद्रोह के प्रसिद्ध योद्धा बाबू कुंवर सिंह थे, 80 वर्ष की आयु में भी अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए और हार कर भी हौसला नहीं खोया, अंतिम सांस तक लड़ते हुए, अंग्रेजों को अनेको बार परास्त किया। अप्रतिम योद्धा बाबू कुंवर सिंह का जन्म 13 नवंबर 1777 को बिहार के जगदीशपुर (आरा के पास) जिले में हुआ था। उनके पिता राजा साहबजादा सिंह और माता का नाम पंचरतन देवी था। कुंवर सिंह के पूर्वज उज्जैन से आकर बिहार में बसे थे, राजा साहबजादा सिंह उज्जैनिया राजवंश से संबंधित थे[1] और जगदीशपुर रियासत के जमीदार थे। कुंवर सिंह बचपन से ही शारीरिक रूप से मजबूत, निर्भीक और न्यायप्रिय थे। उन्होंने शास्त्र और शस्त्र दोनों की शिक्षा प्राप्त की। उनकी शिक्षा–दीक्षा पारंपरिक पद्धति से हुई, जिसमें वेद, पुराण, इतिहास और राजनीति शास्त्र का अध्ययन प्रमुख था। वह स्वाभिमानी, कर्मठ और नेतृत्वकारी गुणों से युक्त थे। कुंवर सिंह का विवाह देवराज एस्टेट के सिसोदिया वंश के राजा फतह नारायण सिंह की बेटी से हुआ था। 1826 में पिता की मृत्यु के बाद कुंवर सिंह जगदीशपुर रियासत के शासक बन गए।[2] 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में अपनी सत्ता का विस्तार करना आरंभ किया। इस दौरान अनेक राजा और ज़मींदारों को झुकने पर मजबूर किया गया और उनकी संपत्ति और अधिकार छीन लिए गए। जगदीशपुर की रियासत भी अंग्रेजों के निशाने पर थी। अंग्रेज़ों ने बिहार के ज़मींदारों पर मनमाने टैक्स और राजस्व लगाना शुरू किया, जिससे वे आर्थिक और सामाजिक रूप से शोषित होने लगे। बाबू कुंवर सिंह ने शुरू से ही अंग्रेजों की इस नीति का विरोध किया।ब्रिटिश सरकार के शोषण

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

और अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए 10 मई 1857 को मेरठ शहर में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के भारतीय सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह कुछ ही समय में पूरे उत्तर भारत में फैल गया। कुंवर सिंह ने इस विद्रोह में सक्रिय भागीदारी की। जब क्रांति की चिंगारी बिहार पहुंची, तब कुंवर सिंह ने इसे अंग्रेजों से अंतिम संघर्ष का अवसर माना। 1857 की विद्रोह में उन्होंने 80 वर्ष की अवस्था में अंग्रेज़ों से लोहा लिया। बाबू कुंवर सिंह का अंग्रेजी सेना के साथ संघर्ष और उनके क्रांतिकारी जीवन की प्रमुख घटनाएं निम्नलिखित हैं:

1. आरा पर कुंवर सिंह का अधिकार– 27 जुलाई 1857 को दानापुर ब्रिटिश छावनी की तीन रेजीमेंटों के विद्रोही सैनिकों ने बाबू कुंवर सिंह का नेतृत्व स्वीकार किया।[3] बाबू कुंवर सिंह के नेतृत्व में इस क्रांतिकारी सेना ने सबसे पहले आरा पर धावा बोल दिया और आरा में अंग्रेजों के खजाने पर कब्जा कर लिया। कुंवर सिंह की सेना ने आरा की जेल तोड़कर कैदियों को आजाद करा लिया। क्रांतिकारी सैनिकों ने आरा हाउस या आरा के छोटे किले को घेर लिया, किले के अंदर छिपे सिख और अंग्रेज सिपाही को बंदी बना लिया। 29 जुलाई 1857 को 400 सिपाहियों की सेना के साथ कैप्टन डनबर को दानापुर छावनी से आरा भेजा गया। कुंवर सिंह की सेना से युद्ध करता हुआ कैप्टन डनबर मारा गया, और आरा पर कुंवर सिंह का अधिकार हो गया।[4] उसके पश्चात बड़ी सेना के साथ मेजर विसेंट आइरे ने आरा पर आक्रमण किया। 2 अगस्त 1857 को मेजर विसेंट आइरे ने बीबीगंज और बिहिया के जंगलों में कुंवर सिंह की सेना पराजित किया और आरा के किले पर अंग्रेजों का पुनः अधिकार हो गया, परंतु यह युद्ध स्वतंत्रता के संघर्ष के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया।

2. जगदीशपुर पर अंग्रेजों का अधिकार– कुंवर सिंह अपने सैनिकों के साथ जगदीशपुर की तरफ लौट आए। 12 अगस्त 1857 को मेजर आइरे ने कुंवर सिंह का पीछा करते हुए, जगदीशपुर को घेर लिया और जगदीशपुर के युद्ध में कुंवर सिंह को पराजित किया और वहां के किले पर अधिकार कर लिया। मेजर आइरे ने कुंवर सिंह के भाइयों के घर और एक ब्राह्मण मंदिर सहित जगदीशपुर शहर के अधिकांश हिस्से को नष्ट कर दिया गया।[5] कुंवर सिंह को अपने 1200 सैनिकों के साथ जगदीशपुर छोड़ दिया, कुंवर सिंह के अनुयायियों में उनके भाई अमर सिंह, रीतनारायण सिंह, भतीजा रथीरंजन सिंह, निशान सिंह, हरकिशन सिंह और सेनापति जय कृष्ण सिंह तथा शाहाबाद के चार जमीदार– नरहन सिंह, जोइन सिंह, ठाकुर दयाल सिंह, विश्वेश्वर सिंह शामिल थे।[6] जगदीशपुर की हार के बाद कुंवर सिंह ने विद्रोह को संगठित करने और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने बिहार में पटना, सोनपुर, सासाराम, आरा के विद्रोहियों को इकट्ठा किया और ब्रिटिश सेना के खिलाफ संघर्ष जारी रखा। उन्होंने उत्तर प्रदेश की बलिया, गाजीपुर, बनारस, कालपी, लखनऊ, आजमगढ़ एवं गोरखपुर तक घूम घूम कर कर लोगों को प्रोत्साहित किया और अंग्रेजों से लड़ने के लिए साहस प्रदान करने का कार्य किया ।

3. मिर्जापुर में कुंवर सिंह– 26 अगस्त 1857 को कुंवर सिंह 40 वी रेजीमेंट के सिपाहियों के साथ मिर्जापुर के पास विजयगढ़ पहुंचे।[7] वहां मिर्जापुर के जिला मजिस्ट्रेट ने रिपोर्ट दी, कि कुंवर सिंह ने मिर्जापुर के आसपास का कोयल का पूरा भंडार बर्बाद कर दिया है।[8] वे 30 अगस्त घोखाल, 1 सितंबर को नेवारी, 4 सितंबर को मैंसर्द और 5 सितंबर में ड्रमंडगंज पहुंचे, अंग्रेजों को चकमा देने के लिए वे अपना निवास स्थान बदलते रहते थे।

4. रीवा में कुंवर सिंह– बाबू कुंवर सिंह मिर्जापुर से रीवा की ओर निकल गये। रीवा के राजा रघुराज सिंह जूदेव बहादुर कुंवर सिंह के दूर के रिश्तेदार थे, लेकिन अंग्रेज समर्थक होने के कारण उन्होंने कुंवर सिंह को अपने राज्य में प्रवेश नहीं करने के लिए पत्र भेजा, लेकिन रघुराज सिंह के मंत्री असमद अली और हरिशचंद्र राय ने कुंवर सिंह को रीवा बुलाया और उन्हें क्रांति के लिए आर्थिक मदद की।[9] अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह करने के लिए उन्होंने कुंवर सिंह से गुप्त समझौता भी किया।

5. कुंवर सिंह बांदा में– 27 सितंबर 1857 को कुंवर सिंह बांदा के नवाब अली बहादुर द्वितीय के पास पहुंचे। बांदा की नवाब और कुंवर सिंह में एक समझौता हुआ और दोनों ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करने का संकल्प लिया। 20 अक्टूबर को कुंवर सिंह बांदा से कालपी की ओर रवाना हुए।[10]

6. कालपी में कुंवर सिंह– 29 अक्टूबर 1857 को कुंवर सिंह अत्यंत कष्ट झेलते हुए 400 मील की लंबी दूरी तय करने की पश्चात कालपी पहुंचे। कालपी आने के बाद नाना साहब, कुंवर सिंह और रानी लक्ष्मीबाई के बीच मंत्रणा हुई। इसके बाद कालपी दुर्ग को ब्रिटिश शासन के खिलाफ क्रांति का नियंत्रण केंद्र बना दिया गया।[11]

7. कुंवर सिंह लखनऊ में– कुंवर सिंह ने दिसंबर 1857 में लखनऊ के नवाब के दरबार में पहुंचे। शाही दरबार में कुंवर सिंह का सम्मान के साथ स्वागत किया गया। उन्हें एक बहुमूल्य खिलअत (शाही पोशाक) प्रदान की गई। उपहार में उन्हें आजमगढ़ जिले में जमींदारी का फरमान और रु 12000 नगद भी प्रदान किए गए।

8. अयोध्या में कुंवर सिंह– 12 फरवरी 1858 को कुंवर सिंह अपनी सेना के साथ अयोध्या पहुंचे।[12] कुंवर सिंह अयोध्या में 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत करने वाले मौलवी अहमदउल्ला शाह फैजाबादी से मिले। अहमद उल्लाह ने रायबरेली के शंकरपुर रियासत के राणा बेनी माधव सिंह के साथ मिलकर अयोध्या को आजाद कराया और राजा मानसिंह को अयोध्या का राजा बनाया।[13]

9. अतरौलिया का युद्ध– कुंवर सिंह ने 18 मार्च 1858 को आजमगढ़ से 25 मील दूर अतरौलिया नामक स्थान पर आकर डेरा डाला।[14] उनके काफिले में एक हजार सैनिक और ढाई हजार समर्थक होने का उल्लेख मिलता है। 22 मार्च 1858 को कुंवर सिंह की फौज पर अंग्रेजी कमांडर मिलमैन ने हमला किया। रणनीति के तहत कुंवर सिंह के सैनिक ने मैदान छोड़ कर भाग गए ,और जब मिलमैन अपने सैनिकों के साथ एक बगीचे में बैठकर भोजन कर रहा था, तब समय कुंवर सिंह की सेना ने अचानक उन धाबा बोल दिया। इस युद्ध में सैकड़ों अंग्रेजी सैनिक मारे गए और मिलमैन अपने बचे हुए सैनिकों को लेकर आजमगढ़ की ओर भाग गया।[15]

अतरौलिया की पराजय का समाचार पाते ही कर्नल डेम्स गाजीपुर से सेना लेकर मिलमैन की सहायता के लिए चल पड़ा। 28 मार्च 1858 को आजमगढ़ से कुछ दूर कर्नल डेम्स और मिलमैन की संयुक्त सेनाओं ने कुंवर सिंह की सेना से युद्ध किया, जिसमें कर्नल डेम्स और मिलमैन की संयुक्त सेनाएं कुंवर सिंह की सेना से पराजित हो गयी।[16] कर्नल डेम्स और मिलमैन ने भाग कर आजमगढ़ के किले में जान बचाई और कुंवर सिंह बनारस की तरफ बढ़ गए। वहां पर लखनऊ क्षेत्र के तमाम विद्रोही सैनिक कुंवर सिंह की सेना में आकर शामिल हो गए।

10. बनारस में युद्ध– कुंवर सिंह की विजयों से लॉर्ड कैनिंग बेचैन हो गया। उसने कुंवर सिंह को पराजित करने के लिए लार्ड मार्क्कर को 8 तोपों से सुसज्जित सेना लेकर भेजा। 6 अप्रैल 1858 को कुंवर सिंह और लार्ड मार्क्कर की सेना में बनारस से ठीक उत्तर

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

दिशा में तमसा नदी के तट पर भीषण युद्ध हुआ। युद्ध में लार्ड मार्क्कर पराजित होकर आजमगढ़ की ओर भागा। कुंवर सिंह की सेना ने उसका पीछा किया और लार्ड मार्क्कर को आजमगढ़ के किले में घेर लिया। लार्ड मार्क्कर की पराजय का समाचार सुनकर, कमांडर लेगर्ड की बड़ी सी आजमगढ़ के किले की तरफ बढ़ी, लेकिन तब तक कुंवर सिंह ने अपनी पैतृक रियासत जगदीशपुर पहुंचने के लिए आजमगढ़ छोड़कर गाजीपुर की ओर बढ़ गए। कमांडर लेगर्ड ने कुंवर सिंह की सेना का पीछा किया, लेकिन कुंवर सिंह अंग्रेजी सेना के हाथ नहीं आए और जब कमांडर लेगर्ड की सेना थक गई, तो अचानक कुंवर सिंह की सेना ने लेगर्ड की सेना पर हमला करके उसे पराजित कर दिया।[17]

11. बलिया के निकट युद्ध– अंग्रेजी हुकूमत ने कुंवर सिंह को पराजित करने के लिए सेनापति डगलस को भेजा। नघई गांव के निकट कुंवर सिंह की सेना को डगलस की सेवा का सामना करना पड़ा। डगलस भी कुंवर सिंह को पराजित करने में नाकाम रहा।

कुंवर सिंह की सेना 21 अप्रैल 1858 को बलिया के निकट शिवपुर घाट से गंगा नदी पार कर रही थी, अंतिम किश्ती में कुंवर सिंह नदी पार कर रहे थे, उसी समय अंग्रेजी सेना के सिपाही की गोली लगने से उनके दाहिने हाथ की हड्डी टूट गई और हाथ लटक गया, उन्होंने तुरंत अपनी तलवार से स्वयं अपना दाहिना हाथ काट कर गंगा नदी में प्रवाहित कर दिया[18] और घाव पर कपड़ा लपेटकर कुंवर सिंह ने गंगा नदी पार की ,अंग्रेजी सेना उनका पीछा ना कर सकी।

12. जगदीशपुर पर अधिकार– 22 अप्रैल 1858 को कुंवर सिंह ने 2000 सैनिकों के साथ जगदीशपुर में प्रवेश किया और जगदीशपुर के किले पर अधिकार कर लिया। कुंवर सिंह के जगदीशपुर पहुंचने की सूचना मिलने पर 23 अप्रैल को कैप्टन लीग्रैंड ने आधुनिकतम एनफील्ड रायफलों एवं तोपों के साथ जगदीशपुर पर आक्रमण किया ।कुंवर सिंह की सेना ने कैप्टन लीग्रैंड को बुरी तरह पराजित किया, लेकिन कुंवर सिंह के कटे हाथ के घाव में तेजी से जहर फैल रहा था, परिणाम स्वरुप 26 अप्रैल 1858 को इस महान वयोवृद्ध पराक्रमी विजेता की मृत्यु हो गयी। कुंवर सिंह की मृत्यु के बाद युद्ध की कमान उनके छोटे भाई अमर सिंह ने संभाली और अमर सिंह भी अपने भाई कुंवर सिंह की तरह निरंतर बिहिया, आदमपुर, दलितपुर आदि स्थानों पर अंग्रेजों को शिकस्त दी रही थी अक्टूबर 1858 में नौनदी के युद्ध में जब अमर सिंह की सारे सैनिक युद्ध में मारे गए ,तो वह नेपाल की तरफ चले गए ,जहां उनकी मृत्यु हो गई।

निष्कर्ष– निसंदेह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और 1857 के विद्रोह में कुंवर सिंह की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण रही। 80 वर्ष की अवस्था में अनेक बाधाओं के बावजूद उन्होंने अंग्रेजी सेना के साथ निरंतर संघर्ष किया। 80 वर्ष की आयु में कुंवर सिंह अपने सैनिकों के साथ रोहतास, रीवा, बांदा, ग्वालियर, कानपुर, लखनऊ, आजमगढ़, बलिया में लगातार आठ महीनों तक क्रांति का अलख जागते रहे। अनेकों बार अंग्रेजी सेनाओं को पराजित किया। बाबू कुंवर सिंह ने वीरता, संगठन, रणनीति और बलिदान की अनूठी मिसाल पेश की।[19] उनका जीवन स्वतंत्रता, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। कुंवर सिंह का संघर्ष 1857 की क्रांति को राष्ट्रीय रूप प्रदान करता है। 12 अप्रैल 1858 को गवर्नर जनरल भारत सरकार के सचिव ने घोषणा की कि "जो व्यक्ति बाबू कुंवर सिंह को जीवित अवस्था में ब्रिटिश सरकार को पर सुपुर्द करेगा, उसे 25000 रुपए पुरस्कार में दिए जाएंगे।" इस घोषणा से साबित होता है कि अंग्रेज सरकार इस महानायक से कितना डरी हुई थी। ब्रिटिश इतिहासकार 'होम्स' ने भी कहा है कि– यह गनीमत थी कि इस युद्ध के समय कुंवर सिंह की उम्र 80 वर्ष थी। यदि वो जवान होते, तो शायद अंग्रजों को 1857 में ही भारत छोड़ना पड़ता। वीर सावरकर ने अपनी पुस्तक' 1857 का महासमर' में कुंवर सिंह की युद्ध नीति को छत्रपति शिवाजी की तरह बताया। उन्होंने लिखा "शिवाजी महाराज के बाद कुंवर सिंह भारत के दूसरे ऐसे बड़े योद्धा थे, जिन्होंने अंग्रेजों से मुकाबला करने के लिए गोरिल्ला युद्ध नीति का इस्तेमाल किया। इसके सहारे उन्होंने अंग्रेजों को कई बार हराया।" निसंदेह बाबू कुंवर सिंह ने वीरता, संगठन, रणनीति और बलिदान की अनूठी मिसाल पेश की। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान का सम्मान करने के लिए भारत गणराज्य ने 23 अप्रैल 1966 को एक स्मारक डाक टिकट जारी किया। बिहार सरकार ने 1992 में आरा में वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय की स्थापना की। 2018 में कुंवर सिंह की मृत्यु की 160 वीं वर्षगांठ मनाने के लिए बिहार सरकार ने उनकी एक प्रतिमा हार्डिंग पार्क में लगवाई और उस पार्क का नाम हार्डिंग पार्क से बदलकर वीर कुंवर सिंह आज़ादी पार्क कर दिया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एस के सिंहा (1997) वीर कुंवर सिंह 1857 के महान योद्धा, उषा बुक्स इंटरनेशनल, पटना, पृष्ठ– 8.
2. विश्व प्रकाश गुप्त मोहिनी (2007) अनुवाद कमलेश कुमारी, स्वतंत्रता सेनानी कोष, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली, प्रथम खंड, पृष्ठ– 267.
3. राम प्रकाश शर्मा (1979) मिथिला का इतिहास खंड–एक, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा, पृष्ठ– 568.
4. कालिकिंकर दत्त (1997) बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड एक, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृष्ठ– 8.
5. डोड जार्ज– भारतीय विद्रोह फारस चीन और जापान की अभियानों का इतिहास 1856–7–8, डब्ल्यू और आर चैंबर्स लंदन ।
6. राम प्रकाश शर्मा (1979) मिथिला का इतिहास खंड– एक, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा, पृष्ठ– 570.
7. एस के सिंहा (1997) वीर कुंवर सिंह 1857 के महान योद्धा, उषा बुक्स इंटरनेशनल, पटना, पृष्ठ– 81.
8. ऊपर्युक्त, पृष्ठ– 82.
9. कालिकिंकर दत्त (1997)बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड एक, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृष्ठ– 51.
10. सुरेंद्रनाथ सेन (1998) अठारह सौ सत्तावन का स्वतंत्रता संग्राम, प्रशासन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार पृष्ठ 262.
11. एस के सिंहा (1997) वीर कुंवर सिंह 1857 के महान योद्धा, उषा बुक्स इंटरनेशनल, पटना, पृष्ठ– 78– 79.
12. शर्मा राम पुकार वीर कुंवर सिंह का जीवन परिचय हिंदी कुंज डॉट कॉम, 4 अप्रैल 2023.
13. नवभारत टाइम्स, अयोध्या, उत्तर प्रदेश– 1857 की क्रांति के योद्धा अहमद उल्लाह शाह फैजाबादी, 25 जनवरी 2021.
14. पोखरियाल संजय– कौन थे वीर कुंवर सिंह? जिन्होंने अंग्रेजों को चटाई धूल, जागरण डॉट कॉम, बिहार पटना 24 अप्रैल 2022.
15. मनीष कुमार सिंह– वीर कुंवर सिंह के नाम से कांपते थे, अंग्रेज 80 साल की उम्र में अंग्रेजों पर पड़े भारी, जी न्यूज़ इंडिया डॉट कॉम पटना 7 अगस्त 1923.

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

16. कालिकिंकर दत्त (1997) बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड एक, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी पृष्ठ– 03.
17. मनीष कुमार सिंह– वीर कुंवर सिंह के नाम से कांपते थे, अंग्रेज 80 साल की उम्र में अंग्रेजों पर पड़े भारी, जी न्यूज़ इंडिया डॉट कॉम पटना 7 अगस्त 1923.
18. कालिकिंकर दत्त (1997)बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड एक, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी पृष्ठ– 56.
19. मोहम्मद जमील हसन अंसारी– 1857 का महासंग्राम और वीर कुंवर सिंह का योगदान, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

*****